26 अक्टूबर 2022, मूल्य 2 रुपये, वर्ष 41, अंक 4, कुल पृष्ठ 36

ISSN 2454 - 5163

वीतराग-विज्ञान

(पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट का मुखपत्र)

सम्पादक :
डॉ. हुकमचंद भारिल्ल

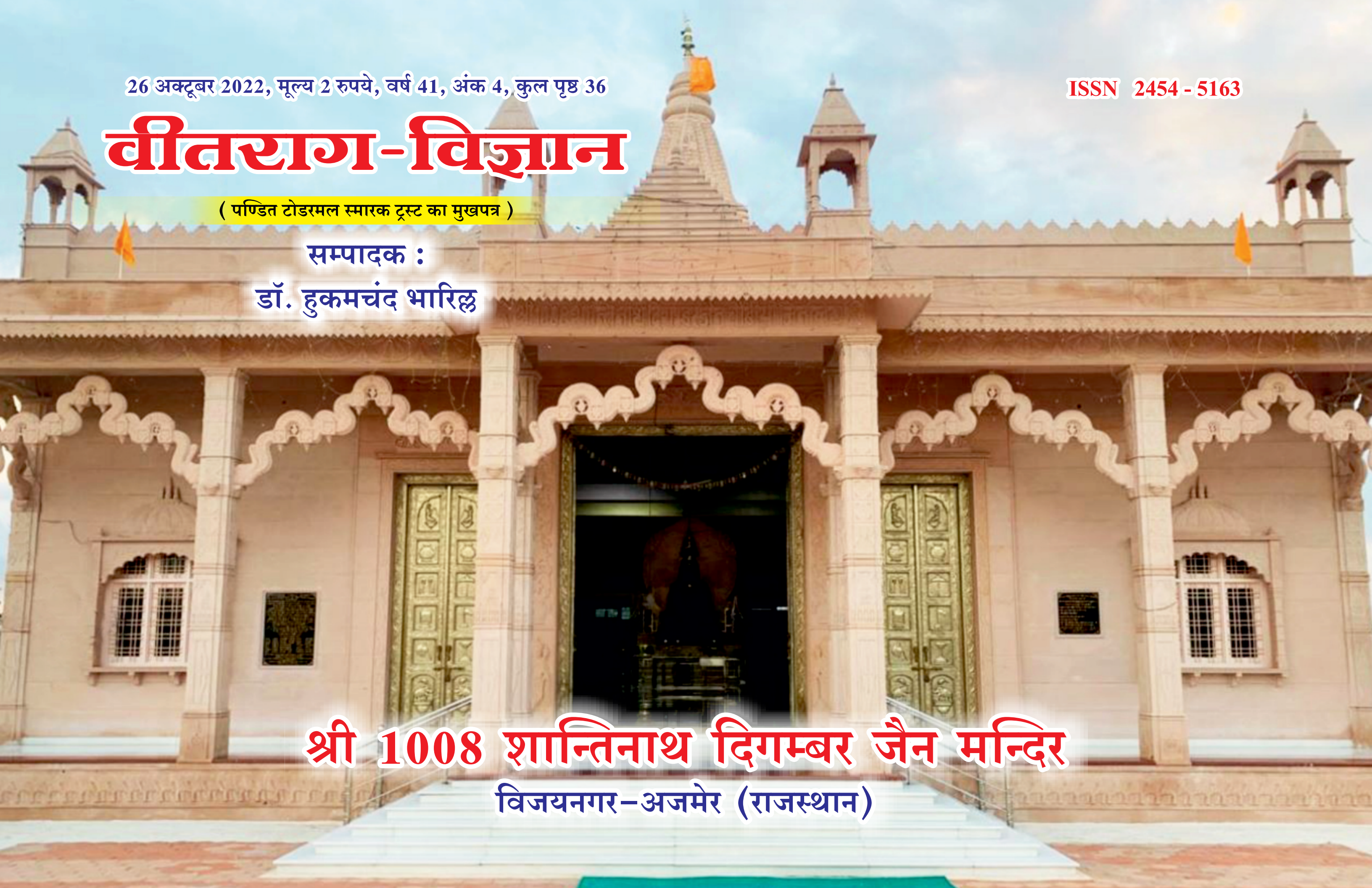

श्री 1008 शान्तिनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर

विजयनगर–अजमेर (राजस्थान)

वीतराग-विज्ञान (471)

हिन्दी, मराठी व कन्नड़ भाषा में प्रकाशित

जैनसमाज का सर्वाधिक बिक्रीवाला आध्यात्मिक मासिक

सम्पादक :

डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

सह-सम्पादक :

डॉ. संजीवकुमार गोधा

प्रकाशक एवं मुद्रक :

ब्र. यशपाल जैन द्वारा पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के लिये जयपुर प्रिण्टर्स प्रा. लि., जयपुर से मुद्रित एवं प्रकाशित।

सम्पर्क-सूत्र :

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015

फोन :(0141)2705581, 2707458

व्हाट्सऐप नं. : 7412078704

E-mail : veetragvigyanjpp@gmail.com

ISSN 2454 - 5163

शुल्क :

आजीवन :	251 रुपये
वार्षिक :	25 रुपये
एक प्रति :	2 रुपये

मुद्रण संख्या :

हिन्दी :	7000
मराठी :	2000
कन्नड़ :	1000
कुल :	**10000**

भगवान महावीर का धर्मतीर्थ

भगवान महावीर का उपदेश ही उनका धर्मतीर्थ है, जिसे समन्तभद्राचार्य ने सर्वोदय तीर्थ कहा है। सबका उदय ही सर्वोदय है अर्थात् जिसमें सबको उन्नति के समान अवसर प्राप्त हों, प्रत्येक व्यक्ति सर्वोच्च पद प्राप्त कर सके, सबको पूर्ण सुखी और ज्ञानी होने का पूर्ण अधिकार हो, वही सिद्धान्त सर्वोदय है। इस अर्थ में तीर्थंकर महावीर द्वारा प्रतिपादित एवं अनादिकाल से समागत जिनसिद्धान्त ही वास्तविक सर्वोदय तीर्थ है; क्योंकि उसमें परमपद भी किसी व्यक्ति विशेष (ईश्वर) को सुरक्षित नहीं है। कोई भी आत्मा जिनागम में बताये मुक्तिमार्ग पर चलकर परमात्मा बन सकता है, परमपद प्राप्त कर सकता है।

सर्वजीव समभाव जैसा जिनागम में प्रतिपादित है; वैसा अन्यत्र दुर्लभ है। समानता ही सर्वोदय का मूल आधार है। महावीर की वाणी में स्वतंत्रता के साथ समानता को भी महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। उनके सर्वोदय तीर्थ के वस्तुस्वातन्त्र्य और समानता – ये दो प्रबल दीप-स्तम्भ हैं; जिन पर स्याद्वाद शैली में अभिव्यक्त अनेकान्तात्मक वस्तुस्वरूप सूर्य और चन्द्रमा की भांति प्रकाशित हो रहा है और अहिंसात्मक आचरण की पावन गंगा में प्रवाहित होकर अपरिग्रह के आनन्द-सागर में लहरा रहा है। (पृष्ठ 84-85)

– तीर्थंकर महावीर और उनका सर्वोदय तीर्थ

वीतराग-विज्ञान

वीतराग-विज्ञान ही, तीन लोक में सार।
वीतराग-विज्ञान का, घर-घर होय प्रसार॥

वर्ष : 41 (वीर निर्वाण संवत् 2549) 471/अंक : 04

राचि रह्यो पर मांहि...

राचि रह्यो पर मांहि तू अपनो रूप न जानै रे॥ टेक ॥
अविचल चिनमूरत बिनमूरत सुखी होत तस ठानै रे।
राचि रह्यो पर मांहि...॥1॥

तन धन, भ्रात तात, सुत जननी, तू इनको निज जानै रे।
ये पर इनहिं, वियोग-योग में यौं ही सुख-दुख मानै रे॥
राचि रह्यो पर मांहि...॥2॥

चाह न पाये, पाये तृष्णा सेवत ज्ञान जघानै रे।
विपतिखेत विधिबंधहेत पै जान विषय रस खानै रे॥
राचि रह्यो पर मांहि...॥3॥

नरभव जिनश्रुतश्रवण पाय अब कर निज सुहित सयानै रे।
दौलत आतम ज्ञान सुधारस पीवो सुगुरु बखानै रे॥
राचि रह्यो पर मांहि...॥4॥

– कविवर पण्डित दौलतरामजी

भगवान महावीर के उपदेश का सार

भगवान महावीर द्वारा जिस त्रैकालिक सत्य का उद्घाटन हुआ, उनकी वाणी में जिस सर्वोदय तीर्थ का प्रस्फुटन हुआ, उसका संक्षिप्त सार इसप्रकार है।

(1) प्रत्येक आत्मा स्वतन्त्र है। कोई किसी के आधीन नहीं है।

(2) सब आत्माएँ समान हैं। कोई छोटा-बड़ा नहीं।

(3) प्रत्येक आत्मा अनन्तज्ञान और सुखमय है। सुख कहीं बाहर से नहीं आना है।

(4) आत्मा ही नहीं, प्रत्येक पदार्थ स्वयं परिणमनशील है, उसके परिणमन में पर-पदार्थ का कोई हस्तक्षेप नहीं है।

(5) सब जीव अपनी भूल से ही दुःखी हैं और स्वयं अपनी भूल सुधारकर सुखी हो सकते हैं।

(6) अपने को नहीं पहचानना ही सबसे बड़ी भूल है तथा अपना सही स्वरूप समझना ही अपनी भूल सुधारना है।

(7) भगवान कोई अलग नहीं होते। यदि सही दिशा में पुरुषार्थ करे तो प्रत्येक जीव भगवान बन सकता है।

(8) स्वयं को जानो, स्वयं को पहचानो, और स्वयं में समा जावो; भगवान बन जावोगे।

(9) भगवान जगत का कर्त्ता हर्त्ता नहीं। वह समस्त जगत का मात्र ज्ञाता-दृष्टा होता है।

(10) जो समस्त जगत को जानकर उससे पूर्ण अलिप्त वीतराग रह सके अथवा पूर्ण रूप से अप्रभावित रहकर जान सके, वही भगवान है।

तीर्थंकर महावीर और उनका सर्वोदय तीर्थ (पृष्ठ 73)

सम्पादकीय

– डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

एकत्व–विभक्त आत्मा

(रोला)

अपने में एकत्व और पर से विभक्तता।
इसको कहते हैं एकत्व–विभक्त आतमा।।
यह एकत्व–विभक्त आतमा समयसार में।
समझाया है कुन्दकुन्द आचार्यदेव ने।।1।।

अनन्त गुणों एवं असंख्य परदेशों की यह।
और अनन्तानन्त त्रिकाली पर्यायों की।।
पूरी अखण्डता ही है रे एकत्व हमारा।
परद्रव्यों से अरे भिन्नता ही विभक्तता।।2।।

इस एकत्व–विभक्त आतमा का आराधन।
ज्ञान–ध्यान–श्रद्धान यही है इसका साधन।।
ज्ञान–ध्यान–साधन–आराधन कुछ भी कहलो।
यह ही सच्चा मोक्षमार्ग है यही समझ लो।।3।।

यह एकत्व–विभक्त आतमा परद्रव्यों का।
स्वामी–कर्त्ता–भोक्ता कैसे हो सकता है?।।
यह असीम आतम अपने में ही सीमित है।
इसीलिए तो सीमन्धर कहते हैं इसको।।4।।

अपने में सीमित होकर भी यह शुद्धातम।
है असीम ज्ञेयों का ज्ञायक यह परमातम।।
यह अपार ज्ञेयों के पार को पा लेता है।
इसकी गौरव गरिमा का न आर–पार है।।5।।

यद्यपि जाने सभी द्रव्य–गुण–पर्यायों को।
पर उनमें कुछ भी कर सकता नहीं आतमा।।
कर्त्ता–भोक्ता सभी द्रव्य हैं अपने–अपने।
स्वामी भी हैं सभी द्रव्य बस अपने–अपने।।6।।

जाने जाते सभी द्रव्य इस आत्मद्रव्य से।
अरे एक गुण ऐसा भी है सब द्रव्यों में।।
प्रमेयत्वगुण कहते हैं उसको श्रीजिनवर।
उसके कारण सभी द्रव्य जाने जाते हैं।।7।।

अरे ज्ञान से जाने सबको यह परमातम।
प्रमेयत्व से सभी द्रव्य जाने जाते हैं।।
अरे ज्ञान है अतः जानता है यह आतम।
प्रमेयत्व है अतः आतमा जाना जाता।।8।।

शेष सभी में ज्ञान नहीं है नहीं जानते।
प्रमेयत्व से केवल वे जाने जाते हैं।।
अतः जानना लक्षण है चेतन आतम का।
चेतनता ही चेतन की गौरव गरिमा है।।9।।

अरे चेतना दो प्रकार की होती जग में।
ज्ञानचेतना अज्ञानचेतना के भेदों से।।
अज्ञानचेतना भी होती है दो प्रकार की।
कर्मचेतना और कर्मफल के भेदों से।।10।।

पर के करने-धरने में ही अरे चेतना।
कर्मचेतना कहलाती है कर्त्तापन से।।
और कर्म के फल में ही रत रहना भाई!
अरे कर्मफल कहलाती है भोक्तापन से।।11।।

पर का कर्त्ता-भोक्तापन अज्ञानचेतना।
ज्ञाता-दृष्टा रहना ही है ज्ञानचेतना।।
ज्ञानचेतना मुक्ति है मुक्ति का मग है।
भव कारण अज्ञानचेतना कही गई है।।12।।

अपने आतम में अपनापन ज्ञानचेतना।
आतम में ही जमना-रमना ज्ञानचेतना।।
अरे आतमा का अनुभव है ज्ञानचेतना।
सम्यग्दर्शन ज्ञान चरण है ज्ञानचेतना।।13।।

सम्यग्दर्शनज्ञानचरण मुक्ति का मग है।
और स्वयं में अपनापन ही सम्यग्दर्शन।।
स्वपरभेदविज्ञान हि सम्यग्ज्ञान कला है।
सम्यक्चारित्र एकमात्र अकषायभाव है।।14।।

आत्मध्यान में ही पैदा होते हैं तीनों।
सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चरण निश्चय से जानो।।
तीनों ही हैं आत्मरूप भूतार्थ बात यह।
शेष सभी हैं अभूतार्थ व्यवहार बखानो।।15।।

निश्चय अर व्यवहार मुक्तिमग दोनों ही तो।
आत्मध्यान में ही तो रे पैदा होते हैं।।
अतः ध्यान ही निज आतम का अरे निरन्तर।
करना है कर्तव्य कहा है ज्ञानिजनों ने।।16।।

परमशुद्धनिश्चयनय का है विषयभूत जो।
उस आतम में अपनापन है सम्यग्दर्शन।।
और उसे निजरूप जानना ज्ञान कहा है।
तथा उसी में जमना-रमना ध्यान कहा है ।। 17 ।।

सम्यग्दर्शन सहित ज्ञान अर ध्यान धरम है।
शुद्धातम का ध्यान धरम का परम मरम है।।
अरे ध्यान के पहले उसका ज्ञान जरूरी।
और ज्ञान के साथ विमल श्रद्धान जरूरी।।18 ।।

अरे ज्ञान-श्रद्धान बिना न ध्यान कभी हो।
ज्ञान-ध्यान-श्रद्धा बिन न कल्याण कभी हो।।
यदि करना कल्याण आतमा का हे भाई!
ज्ञान-ध्यान-श्रद्धान करो आतम का भाई ।।19।।

ज्ञान-ध्यान-श्रद्धान आत्मा के आश्रय से।
होते हैं तो निज आतम पहिचान करो तुम।।
जिन-आगम के आश्रय से अर सदुपदेश से।
करो प्रमाणित उसे आत्मा के अनुभव से।।20।।

तनरूपी मन्दिर में है भगवान आतमा।
तन जड़ है पर चेतन है भगवान आतमा।।
यद्यपि वे हैं एकक्षेत्र-अवगाही किन्तु।
फिर भी वे हैं पृथक्-पृथक् जिन ऐसा कहते।।21।।

रे परमातम देव विराजे मनमन्दिर में।
एवं आतमदेव विराजे तनमन्दिर में।।
मनमन्दिर के देव सातिशय पुण्य बन्धावें।
तनमन्दिर के देव हमें शिवपुर पहुँचावें।।22।।

मनमन्दिर के देव परमप्रिय परमातम हैं।
तनमन्दिर का देव हमारा ही आतम है।।
परमातम के चरणों में अति भक्तिभाव से।
करता हूँ मैं सत् श्रद्धा के सुमन समर्पित।।23।।

अपने में अपनेपन की महिमा अद्भुत है।
अपने में अपनापन करता हूँ मैं अर्पित।।
अधिक कहूँ क्या हे परमातम! निज आतम में।
अपनेपन से हो जाता हूँ पूर्ण समर्पित।।24।।

स्व-पर भेदविज्ञान धर्म का मूल तत्त्व है।
इसे प्राप्त कर भव्यजीव निज आतम पाते।।
निज आतम में अपनापन स्थापित कर वे।
निज आतम के ज्ञान-ध्यान में थिर हो जाते।।25।।

बाँटो तुम दो भागों में सारी दुनियाँ को।
छाँटो फिर अपना आतम जो ज्ञानस्वभावी।।
ज्ञानतत्त्व अर ज्ञेयतत्त्व दो रूप जगत है।
ज्ञानस्वभावी आतम बाकी ज्ञेयतत्त्व हैं।।26।।

ज्ञान ज्ञेय - दोनों बातें हैं आत्मतत्त्व में।
सभी अनातम भाव अकेले ज्ञेय भाव हैं।।
पर ज्ञेयों से भिन्न आतमा ज्ञानस्वभावी।
परम तत्त्व निज आतम ज्ञानानन्द स्वभावी।। 27 ।।

अरे देह में रहकर भी यह देह नहीं है।
यद्यपि इसमें राग किन्तु यह राग नहीं है।।
पर्यायों से पार आतमा ज्ञान पिण्ड है।
गुणभेदों से भिन्न प्रभु अति ही प्रचण्ड है।।28।।

अरे ज्ञानघनपिण्ड आतमा निर्विकल्प है।
आनन्द का रसकन्द आतमा परमतत्त्व है।।
निर्विकल्प यह जीव विकल्पों में नहीं आता।
आतम अनुभवगम्य अतः अनुभव में आता।।29।।

करो भावना अरे निरन्तर भेदज्ञान की।
भेदज्ञान की महिमा में नित चित्त लगाओ।।
अविरल धारा बहे ज्ञान में भेदज्ञान की।
भव्य भावना रहे ध्यान में भेदज्ञान की।।30।।

भेदज्ञान के इस अविरल धारा प्रवाह से।
कैसे भी कर प्राप्त करे जो शुद्धातम को।।
और निरन्तर उसमें ही थिर होता जावे।
पर परिणति को त्याग निरन्तर शुध हो जावे।।31।।

भेदज्ञान की शक्ति से निजमहिमा रत को।
शुद्धतत्त्व की उपलब्धि निश्चित हो जावे।।
शुद्धतत्त्व की उपलब्धि होने पर उसके।
अतिशीघ्र ही सब कर्मों का क्षय हो जावे।।32।।

आत्मतत्त्व की उपलब्धि हो भेदज्ञान से।
आत्मतत्त्व की उपलब्धि से संवर होता।।
इसीलिए तो सच्चे दिल से नितप्रति करना।
अरे भव्यजन! भव्यभावना भेदज्ञान की।।33।।

भगवती अहिंसा भगवान महावीर की साधना की चरम उपलब्धि है, उनकी पावन दिव्यध्वनि का नवनीत है, जन्म-मरण का अभाव करनेवाला रसायन है। अहिंसा तो परम अमृत है, जो इस अमृत के प्याले को पियेगा, वह अमर होगा, सुखी होगा, शान्त होगा।

गागर में सागर (पृष्ठ : 94-96)

छहढाला प्रवचन

सिद्धि प्राप्ति का उपाय

जहाँ ध्यान-ध्याता-ध्येय को न विकल्प वच भेद न जहाँ।
चिद्भाव-कर्म, चिदेश-कर्त्ता, चेतना-किरिया तहाँ।।
तीनों अभिन्न अखिन्न शुध-उपयोग की निश्चल दशा।
प्रकटी जहाँ दृग-ज्ञान-व्रत, ये तीनधा एकै लसा।।9।।

(सुप्रसिद्ध आध्यात्मिक विद्वान पण्डित दौलतरामजी कृत छहढाला की छठवीं ढाल पर गुरुदेवश्री के प्रवचन पाठकों के लाभार्थ यहाँ प्रस्तुत किये जा रहे हैं।)

(गतांक से आगे....)

स्वरूपाचरण का वर्णन करते हुए यहाँ कहते हैं। **चिद्भावकर्म चिदेश कर्त्ता**। चिदेश अर्थात् चैतन्य ईश्वर। आत्मा स्वयं अपने चैतन्य वैभव का स्वामी होने से चिदेश्वर है। वह चिदेश स्वयं अपने सम्यक्त्वादि चैतन्यभावों का अभेदरूप से कर्त्ता है। राग चैतन्य से भिन्न भाव है; इसलिए वह चैतन्यभाव का कर्त्ता नहीं है और चिदेश भगवान राग का कर्त्ता नहीं है। चिदेश भगवान आत्मा स्वयं अपने ज्ञानभावों का स्वामी और कर्त्ता है।

हे जीव! तू राग या धनादि जड़पदार्थों के स्वामी के रूप में शोभा नहीं देता, ये तो तेरे लिए कलंक हैं। सम्यक्त्व आदि ज्ञानभावों का स्वामी होने में ही तेरी शोभा है। भाई! चैतन्य परमेश्वर को जड़ का स्वामित्व नहीं होता। आत्मा स्वयं चैतन्य परमेश्वर है। अनन्त जीव अपने चैतन्य परमेश्वर में से सर्वज्ञता प्रकट करके वीतराग परमेश्वर के रूप में शोभित हो रहे हैं और कह रहे हैं कि तू भी चैतन्य परमेश्वर है। परमेश्वर जगत के कर्त्ता या स्वामी नहीं होते, वे अपने चैतन्यभाव के कर्त्ता और स्वामी होते हैं।

भाई! यह बात समझकर अपूर्व कार्य करने का यह मंगल अवसर आया है; इसलिए तो आत्मार्थी होकर सच्ची विधि समझ ले। सच्ची विधि समझेगा, तो सच्चा आचरण होगा। यदि विधि ही उल्टी समझेगा अर्थात् रागरूप आचरण को स्वरूपाचरण समझेगा तो तुझे कभी मोक्षमार्ग का सच्चा आचरण नहीं होगा और निरन्तर मोहरूप, रागरूप और अज्ञानरूप आचरण होगा जो कि संसार का ही कारण हैं। रागरहित ज्ञानमय स्वरूपाचरण ही मुक्ति का कारण है।

भगवान कहते हैं कि भाई! अज्ञान के कारण तूने अपने चैतन्य स्वरूप में आचरण छोड़कर परभाव का आचरण किया और तू दुःखी हुआ; अब तो राग से भिन्न अपने चैतन्यस्वरूप को जानकर उसमें आचरण कर, इसमें तुझे अपूर्व सुख होगा। हम तुझे तेरे हित की बात बताते हैं, इसे लक्ष्य में ले, इसी में अपूर्व शान्ति है और इसी में तेरे आत्मा की शोभा है। अरे चैतन्य प्रभु आत्मा क्या दुःख में शोभेगा? नहीं, वह तो अपने चैतन्यसुख में ही शोभेगा, उसकी शोभा अद्भुत है।

सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र की एकतारूप मोक्षमार्ग में तीनों अभेदरूप शोभित होते हैं। जिसप्रकार हलवे में घी, शक्कर और आटा तीनों अभेदरूप होते हैं; उसीप्रकार मोक्षरूपी हलवे में सम्यग्दर्शन, ज्ञान और चारित्र अभेदरूप से रहते हैं। जड़ की क्रिया और राग से मोक्षमार्ग का हलवा नहीं बनता। तीनों अलग-अलग रहें तो हलवा नहीं बनता। स्वानुभूति में भी तीनों एकरस रहें, तभी आनन्द का स्वाद आता है। गुणभेद के लक्ष्य में अटकने पर चैतन्य हलवे का स्वाद नहीं आता। अभेदरूप स्वानुभूति में ही मोक्षसुखरूप हलवे का स्वाद आता है। जो रत्नत्रयरूप मोक्षमार्ग में शुभराग को मिलाना चाहता है, उसे मोक्षरूपी हलवे की विधि नहीं आती; वह मोक्ष का उपाय नहीं जानता। भाई! मोक्ष

का मार्ग शुद्धोपयोगरूप है, रागरूप नहीं। राग तो बंधमार्ग है, मोक्षमार्ग रागरहित है, वह तेरे चैतन्यस्वभाव के आश्रय से है। राग तो चैतन्य से बाहर है। चैतन्यस्वभाव और राग – दोनों के लक्षण भिन्न-भिन्न हैं और प्रज्ञाछैनी द्वारा दोनों की भिन्नता का अनुभव होता है।

प्रज्ञाछैनी रूप ज्ञान जब राग से भिन्न होकर चैतन्यस्वभाव में एकाग्र होता है और अपूर्व आनन्द भोगता है; तब कर्त्ता-कर्म के समान भोक्ता-भोग्य का भेद भी नहीं होता। तब राग का भोक्तापना तो रहता ही नहीं; परन्तु मैं आनन्द का भोक्ता हूँ – ऐसा भेद विकल्प भी आनन्द के वेदन में नहीं होता। अपने अन्दर ही अन्दर अर्थात् वस्तु में कर्त्ता-कर्मपना, ज्ञाता-ज्ञान-ज्ञेयपना, ध्याता-ध्यान-ध्येयपना, भोक्ता-भोग्यपना आदि सब हैं अवश्य; परन्तु ये सब अभेदरूप हैं। स्वानुभूति में कोई भेद नहीं देखते। मुनिराज ऐसी अनुभूति में लीन होकर अतिशीघ्र केवलज्ञान प्रकट करके परमात्मा हो जाते हैं।

इसप्रकार मुनिराज के शुद्धोपयोगरूप स्वरूपाचरण का वर्णन किया। अब दसवें छन्द में उसका विशेष वर्णन करेंगे।

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित पत्रिकाएँ

वीतराग-विज्ञान (मासिक)

एवं

जैन पथप्रदर्शक (पाक्षिक)

PLEASE SCAN

पत्रिकाओं के सदस्य बनकर नियमित रूप से प्राप्त करने एवं Whatsapp या E-Mail के माध्यम से ऑनलाइन प्राप्त करने के लिए इस QR Code को स्कैन करें।

सम्पर्क करें – 7412078704 या Veetraggyanjpp@gmail.com

नियमसार प्रवचन –

एकत्व ही सौन्दर्य है

परमपूज्य सर्वश्रेष्ठ दिगम्बराचार्य कुन्दकुन्द के प्रसिद्ध परमागम नियमसार के परमार्थप्रतिक्रमणाधिकार की गाथा 102 पर हुये आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के अध्यात्मरस गर्भित प्रवचनों का संक्षिप्त सार यहाँ दिया जा रहा है। गाथा मूलत: इसप्रकार हैं –

एगो मे सासदो अप्पा णाणदंसणलक्खणो।
सेसा मे वाहिरा भावा सव्वे संजोगलक्खणा।।102।।

(हरिगीत)

ज्ञान–दर्शनमयी मेरा एक शाश्वत आतमा।
शेष सब संयोगलक्षण भाव आतम बाह्य हैं।।102।।

अन्वयार्थ : ज्ञानदर्शन लक्षणवाला शाश्वत एक आत्मा मेरा है; शेष सब संयोग लक्षण वाले भाव मुझसे बाह्य हैं।

(गतांक से आगे....)

एकरूप शाश्वत कारणपरमात्मा ही ज्ञानी को उपादेय है। ऐसा अब कहते हैं –

‘‘तथा वही कारणपरमात्मा समस्त क्रियाकाण्ड के आडम्बर के विविध विकल्परूप कोलाहल से रहित सहजशुद्ध ज्ञानचेतना को अतीन्द्रियपने भोगता हुआ शाश्वत रहकर मेरे लिए उपादेयरूप से रहता है।

चैतन्यस्वरूप के अलावा बाहर के लक्ष्य से जितने शुभाशुभभाव होते हैं, वे सब क्रियाकाण्ड के आडम्बर हैं। बाहर के लक्ष्य से तो अनेक प्रकार के विकल्प का कोलाहल होता है। चैतन्य में कोई कोलाहल है नहीं, वह तो उपशमरस का कन्द शान्त–शान्त है, उसमें बाहर का कोई आडम्बर

नहीं है। मेरा आत्मा तो सब कोलाहल से रहित सहज शुद्ध ज्ञान-चेतना को अतीन्द्रियपने भोगता हुआ शाश्वतरूप से मेरे लिए उपादेयपने रहता है। एक समय की पर्याय तो क्षणिक है, उसे गौण करके जो त्रिकाली सहजज्ञानचेतना है, उसी को मैं त्रिकाल भोगता हूँ।

आत्मा में संयोग का अभाव कहा और उसे शाश्वत बतलाया। चिदानन्दबिम्ब शाश्वत रहकर ध्रुव आनन्दपर्याय को भोगता हुआ मेरे लिए उपादेय है। आत्मा ध्रुव आनन्द चेतना को त्रिकाल भोग रहा है, वही आत्मा मुझे अंगीकार करने योग्य है। सम्यग्दर्शन के लिए भी ऐसा आत्मा ही भगवान ने उपादेय कहा है।

अहो! अज्ञानी को अपने ऐसे आत्मा का परिचय नहीं है; परन्तु उसका भान होते ही ज्ञानी कहता है कि अहो! मेरे लिए उपादेयरूप आत्मा तो ज्यों का त्यों शाश्वत है, ज्ञान-दर्शनलक्षणवाला मेरा आत्मा ऐसा है, अन्य सभी शुभाशुभकर्म से होनेवाले भाव मेरे स्वरूप से बाहर हैं – ऐसा ज्ञानी का निश्चय है।

मैं शाश्वत ज्ञान-दर्शनलक्षणमय एक आत्मा हूँ। जो त्रिकाली सहजज्ञानचेतना को भोगनेवाला कारणपरमात्मा है, वही मुझे उपादेय है। मेरा आत्मा त्रिकाल शाश्वत है और अपनी सहजज्ञानचेतना को भोगता हुआ त्रिकाल विराजमान है। ऐसे आत्मस्वभाव के अतिरिक्त अन्य सभी संयोगलक्षणवाले भाव हैं, वे मुझसे बाह्य हैं। पूर्व में जो शुभाशुभभाव के कारण कर्म बँधे थे, उनके संयोग से जो बाह्य और अभ्यन्तर परिग्रह है, वह सब मेरे स्वरूप से बाहर है। राग-द्वेष भाव अभ्यन्तर परिग्रह हैं और बाह्य में लक्ष्मी-निर्धनता रोग-निरोगता – ये सब बाह्य परिग्रह हैं। वे सभी अन्तरंग-बहिरंग परिग्रह मेरा स्वरूप नहीं हैं, मैं तो शाश्वत ज्ञान-दर्शन लक्षण से लक्षित त्रिकाली कारणपरमात्मा हूँ – ऐसा मेरा निश्चय है।

ऐसा निश्चय किये बिना प्रत्याख्यान नहीं होता है। आत्मा के त्रिकालीस्वरूप के अलावा जितने भी विकार और संयोग हैं, वे सब मुझसे भिन्न हैं। स्वर्ग या नरक, समवशरण अथवा निर्धनता – ये सब कर्मजनित हैं, मेरे स्वभाव से उत्पन्न नहीं हुये हैं। मेरे में उत्पन्न होनेवाले शुभाशुभभाव भी मेरे निजस्वरूप से बाह्य हैं। इसप्रकार अपने आत्मा का निर्णय करना प्रथम धर्म है और ऐसा भान होने के पश्चात् उसमें एकाग्र रहने पर राग-द्वेष के भाव उत्पन्न ही नहीं होते, उसका नाम प्रत्याख्यान है।

जो जीव राग अथवा संयोग से लाभ मानेगा, वह जीव उससे भिन्न अपने स्वरूप को नहीं मानेगा; क्योंकि जिससे लाभ मानेगा, उसको अपना मानेगा ही; अपना माने बिना उससे लाभ मान नहीं सकता और जिसको अपने से भिन्न जानेगा, उससे अपने को लाभ भी नहीं मानेगा; इसलिए कहा कि मेरा आत्मा तो त्रिकाली सहज ज्ञानचेतनामय है तथा रागादिभाव एवं संयोग मेरे स्वरूप से बाह्य हैं – ऐसा प्रथम निर्णय करना। एक सैकण्ड भी ऐसा निर्णय कर लेनेवाले को दीर्घ संसार नहीं रह सकता।

(अब इस 102वीं गाथा की टीका पूर्ण करते हुए टीकाकार मुनिराज श्लोक कहते हैं)

(मालिनी)

अथ मम परमात्मा शाश्वतः कश्चिदेकः।
सहजपरमचिच्चिन्तामणिर्नित्यशुद्धः।।
निरवधिनिजदिव्यज्ञानदृग्भ्यां समृद्धः।
किमिह बहुविकल्पैर्मे फलं बाह्यभावैः।।138।।

(वीर)

सदा शुद्ध शाश्वत परमातम मेरा तत्त्व अनेरा है।
सहज परम चिद्चिन्तामणि चैतन्य गुणों का बसेरा है।।

अरे कथंचित् एक दिव्य निज दर्शनज्ञान भरेला है।

अन्य भाव जो बहु प्रकार के उनमें कोई न मेरा है।।138।।

श्लोकार्थ : मेरा परमात्मा शाश्वत है, कथंचित् एक है, सहज परम चैतन्य चिन्तामणि है, सदा शुद्ध है और अनन्त निज दिव्य ज्ञान-दर्शन से समृद्ध है। ऐसा है तो फिर बहुप्रकार के बाह्य भावों से मुझे क्या फल है?

अहो! मेरा परमात्मा ही शाश्वत है। मुझसे भिन्न अरिहन्त परमात्मा अथवा सिद्धपरमात्मा मेरे लिए शरण नहीं हैं, वे तो मेरे लिए संयोगरूप हैं। मेरा आत्मा कथंचित् एक है, गुण से अनेकता होने पर भी वस्तुपने एक है।

मेरा आत्मा सहज परमचैतन्यचिन्तामणि है। ऐसा चिन्तामणि है कि उसमें एकाग्र होने पर जो चिन्तवन करे, वह मिले। उस चैतन्य के चिन्तवन से परमात्मदशा प्रगट हो जाय, अनन्त आनन्द प्राप्त हो जाय।

तथा मेरा आत्मा सदा शुद्ध है। पर्याय की क्षणिक अशुद्धता वास्तव में मेरा स्वरूप नहीं है; मैं तो सदा शुद्ध हूँ और अनन्त निज दिव्यज्ञान-दर्शन से समृद्ध हूँ।

मेरा परमात्मतत्त्व ऐसा है, तो फिर मेरे आत्मा के अतिरिक्त बहुप्रकार के बाह्यभावों से मुझे क्या लाभ है? रागादि बाह्यभाव अथवा स्त्री-पुत्रादि बाह्यसंयोग मेरे लिए उपादेय नहीं हैं, मुझे तो मेरा चैतन्यचिन्तामणि आत्मा ही उपादेय है, वही मेरे कल्याण का कारण है – ऐसा धर्मी समझता है।

मेरा आत्मा ही चैतन्यचिन्तामणि है, तो फिर बाह्य निमित्तों से अथवा विकल्पों से मुझे क्या प्रयोजन है? मैं अपने चैतन्यचिन्तामणि को लक्ष्य में लेकर उसमें एकाग्र हो जाऊँ, अरिहन्त परमात्मा भी मेरे लिए बाह्य हैं, मेरे लिए तो मेरा आत्मा ही शाश्वत है और उसी के आश्रय से मुझे लाभ है। बाह्य समृद्धि को धर्मी अपनी नहीं मानता तथा पुण्य के भावों को भी वह अपने स्वरूप की समृद्धि नहीं मानता, यही प्रत्याख्यान है।

मैं स्वयं ही चैतन्यचिन्तामणि हूँ और मेरा आत्मा ही मुझे सर्वसमृद्धिदायक है। जिस जीव के हाथ में चिन्तामणि आवे, फिर उसे किसी अन्य मनुष्य की अपेक्षा नहीं रहती।

चिन्तामणि के समक्ष चिन्तवन करने से तो जड़ सामग्री मिलती है; परन्तु धर्मी कहते हैं कि मेरे हाथ में जो चिन्तामणि है, उसमें से वह सब मिले, जो मैं चिन्तवन करूँ। इसके अलावा बाहर का कोई पदार्थ मेरा नहीं है, सारा पदार्थसमूह मेरे से बाह्य है, मैं तो निज चिन्तामणि का चिन्तवन करता हूँ। (क्रमश:)

नि:शुल्क नि:शुल्क नि:शुल्क

जिनवाणी माँ को रखने हम तैयार...हम तैयार

इस कलिकाल में माँ जिनवाणी ही एकमात्र शरणभूत है; अत: हम सबको अपने घर/मंदिर/स्वाध्याय भवनादि स्थानों में जिनवाणी को रखना चाहिए, जिससे समय-समय पर हम उसका लाभ ले सकें। इसीप्रकार के भाव **श्री सौरभजी डी मेहता हस्ते श्री धनपतजी मेहता** द्वारा (स्व. श्रीमती चांदजी डी मेहता की पुण्य स्मृति में) संजोए गए।

इस योजना के अन्तर्गत...

1) आप पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट जयपुर द्वारा प्रकाशित एवं वहाँ उपलब्ध अन्य सत्साहित्य मंगा सकते हैं।
2) एक स्थान पर तीन हजार तक का साहित्य मँगा सकते हैं।
3) पूजन विधान की पुस्तकें इसमें सम्मलित नहीं होंगी।
4) एक पुस्तक की पाँच प्रतियाँ ही मँगा सकते हैं।

साहित्य प्राप्ति हेतु सम्पर्क करें-
नन्दकिशोर पारीक - 7412078703

समयसार की 47 शक्तियों पर प्रवचन

परिणम्यपरिणामकत्व शक्ति

आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी द्वारा समयसार की 47 शक्तियों पर किये गये प्रवचनों को यहाँ पाठकों के लाभार्थ क्रमश: प्रकाशित किया जा रहा है।

(गतांक से आगे....)

अहो! अन्दर में स्वरूप के आनन्द में झूलते-झूलते आचार्य भगवान ने आत्मा की शक्तियों का महा अद्‌भुत वर्णन किया है। वे कहते हैं कि आत्मा की शक्तियाँ अनन्त हैं; परन्तु सभी कही नहीं जा सकतीं; क्योंकि शब्द परिमित हैं और शक्तियाँ तो अपरिमित, अनन्त हैं, जिससे वचन द्वारा हम कितनी कहें? तथा हमें उनको कहने की फुर्सत भी कहाँ हैं? हम तो निजानन्दरस में लीन रहते हैं। केवलज्ञान होने पर समस्त अनन्त शक्तियाँ प्रत्यक्ष ज्ञात होंगी; अत: वाणी में कितनी कही जायें; फिर भी आचार्यदेव ने 47 शक्तियों का वर्णन करके आत्मा के अद्‌भुत वैभव को दिखाया है।

उन अनन्त शक्तियों में आत्मा की एक ऐसी शक्ति भी है कि जिससे आत्मा स्वयं स्व-पर का ज्ञाता होता है और स्व-पर का ज्ञेय भी होता है। यहाँ आत्मा स्व-पर का ज्ञेय बने - ऐसा कहा है, जिसका अर्थ है पर का अर्थात् परजीवों के ज्ञान में ज्ञेय बने - ऐसी बात है। आत्मा जड़पदार्थों का ज्ञेय बने - ऐसी बात नहीं है; क्योंकि जड़ पदार्थों में जानने की शक्ति ही नहीं है तथा जड़ इन्द्रियादि को तो अपना ही ज्ञान नहीं है, तब वे परपदार्थों को कैसे जान सकते हैं। एकमात्र आत्मा को ही स्व-पर का ज्ञान है। अहो! निज आत्मा के ऐसे ज्ञेय-ज्ञायक स्वभाव को अन्तर्मुख

होकर जानने पर स्वयं को स्वयं का ज्ञान होता है। स्वयं सूक्ष्म अरूपी वस्तु है, जिससे स्वयं स्वयं को नहीं जानता है, ऐसा कोई अज्ञानी मानता है; परन्तु ऐसी वस्तुस्थिति नहीं है। अरे भाई! स्वयं की खबर न हो तो अपनी निःशंक प्रतीति कहाँ से हो? तथा निजस्वभाव की निशंकता हुए बिना साधकजीव किसकी साधना करे? अरे भाई! अन्दर तेरा स्वभाव ही ऐसा है कि अन्तर में जाग्रत होने पर स्वरूप की निःसन्देह प्रतीति हो जाती है। इसी का नाम धर्म है और यही मोक्षमार्ग है।

अहा..! स्व-पर को ग्रहण करने का जीव का स्वभाव है। यहाँ ग्रहण करने का अर्थ जिसप्रकार हाथ से हम किसी वस्तु को पकड़ते हैं, उसीप्रकार ज्ञेय को पकड़ना नहीं है; क्योंकि आत्मा के हाथ-पैर नहीं हैं। ग्रहण करने का अर्थ जाननामात्र है। यहाँ स्व-पर को ज्ञेय कहा, उसमें अनन्त गुणमय त्रिकाली शुद्धद्रव्य और उसमें अभेद, तन्मय होनेवाली वीतराग-परिणति स्वज्ञेय है तथा व्यवहार रत्नत्रय का राग तथा देव-गुरु आदि परज्ञेय हैं; क्योंकि राग और देव-गुरु कोई भी परपदार्थ जीवस्वरूप नहीं हैं। अहा..! जो इस बात को अन्तर में समझता है, उसके ज्ञान में निज शुद्ध चैतन्य का ग्रहण होता है तथा परज्ञेय मेरा है - ऐसा विपरीत श्रद्धान दूर हो जाता है। यही अपूर्व धर्म है।

आहाहा....! भगवान! तुम अकेले चैतन्यस्वरूप हो। 17वीं-18वीं गाथा की टीका में आया है कि आबाल-गोपाल सभी को सदाकाल ज्ञान की पर्याय में स्वज्ञेय जानने में आता है, ऐसा ज्ञान की पर्याय का स्वभाव है; परन्तु अरे! अनादि से इसकी बहिर्दृष्टि है। त्रिकाली एक ज्ञायकभाव की दृष्टि हुए बिना जीव की दृष्टि पर से हटती नहीं है; परन्तु अन्तर्दृष्टि करते ही शुद्ध चैतन्य का ग्रहण हो जाय, ऐसा भगवान आत्मा का ज्ञानस्वभाव है। आहाहा...! तेरा ज्ञानस्वभाव स्व-पर ज्ञेयों को जानने

वाला प्रमाणज्ञानरूप है तथा तेरा अनादि–अनन्त स्वभाव केवली आदि के ज्ञान में ज्ञात होने से प्रमेय स्वभावरूप है। आहाहा...! तुझमें ऐसी परिणम्य–परिणामकत्व शक्ति है।

अरे भाई! यह पैसा मेरा है, तू ऐसा मानता है; परन्तु ऐसा मानना तेरा स्वभाव नहीं है। लक्ष्मी, मकान, स्त्री–कुटुम्ब–परिवार, देव–गुरु आदि ये सभी ज्ञेयरूप से तुम्हारे ज्ञान में ज्ञात तो होते हैं; परन्तु तुम्हारे नहीं हो जाते। उन ज्ञेयों को अपना मानना तो केवल भ्रम है; क्योंकि ऐसा वस्तुस्वभाव नहीं है तथा पर के प्रमाण में प्रमेय बनना तेरा स्वभाव है; परन्तु पर को तू हो जाये, पिता–पुत्र का तू हो जाये – ऐसा तेरा स्वभाव नहीं है।

सुनो तो सही प्रभु! जगत की समस्त चीजें ज्ञेयरूप से तुम्हारे ज्ञान में ज्ञात होवें – ऐसा तुम्हारे ज्ञान का स्वभाव है। भाई! तू उन वस्तुओं का स्वामी नहीं है। आहाहा...! परज्ञेयों को ग्रहण करने रूप जो प्रमाणज्ञान है, तुम उसके स्वामी हो; परन्तु परज्ञेयों के स्वामी नहीं हो। भगवान मेरे हैं, गुरु मेरे हैं – ऐसा मानना गलत है; क्योंकि ये सभी ज्ञान के ज्ञेय मात्र हैं। ये भगवान मेरे हैं, ये गुरु मेरे हैं – ऐसी तो जगत में कोई वस्तु ही नहीं है तथा ज्ञानानन्द स्वभाव से यह जीव परिणमन करे तो इसके प्रमाणज्ञान में प्रमेय होकर वे जानने में आते हैं।

केवलज्ञान में समस्त ज्ञेयाकारों को युगपत् ग्रहण करने का स्वभाव है तथा केवली के ज्ञान में ज्ञेयाकारों को ग्रहण करानेवाला उसका प्रमेय स्वभाव है। भाई! तेरे ज्ञानस्वभाव में सभी ज्ञेय ज्ञात होने लायक हैं, बस इतना समझ। परज्ञेय मेरे हैं और मैं पर का हूँ, यह बात भुला दे भाई! क्योंकि ऐसी वस्तु नहीं है। अहो..! आचार्यदेव ने अमृत उड़ेला है।

आहाहा...! जहाँ अनन्त स्वभावमय अमृत सागर उछलता है, वहाँ विरोध की बात शोभा नहीं देती। यहाँ तो कहते हैं कि जगत में कोई भी

प्राणी विरोधी नहीं है; सर्वप्राणी ज्ञेयमात्र हैं, यह भगवान का न्यायमार्ग है। भाई! जैसा पदार्थों का स्वरूप है, वैसा उनका ज्ञान करना न्याय है तथा वैसी उनकी प्रतीति करना सम्यग्दर्शन है और वही धर्म है। यहाँ तो इतनी बात है कि पर ज्ञेयाकार स्वयं के ज्ञान में निमित्तमात्र हैं तथा स्वयं के ज्ञानाकार पर के ज्ञान में निमित्तमात्र हैं, यह ही आत्मा का परिणम्य-पारिणामकत्व स्वभाव है।

भाई! वीतराग सर्वज्ञदेव ऐसा कहते हैं कि मेरे ज्ञान में तुम ज्ञेय तरीके ज्ञात होने लायक हो; परन्तु तुम मेरे कुछ नहीं हो तथा मैं भी परद्रव्यस्वरूप केवलज्ञानी जीव के ज्ञान में प्रमेय होने लायक हूँ; परन्तु उनका मैं कुछ नहीं हूँ – ऐसा ही वस्तु का स्वभाव है।

कई लोग स्त्री को अर्धांगिनी कहते हैं; परन्तु स्त्री अर्धांगिनी नहीं है, वह तो तुम्हारे ज्ञान का ज्ञेय हैं, उस ज्ञेय का ज्ञान करनेवाली जो ज्ञान की परिणति है, वह तेरी है; क्योंकि स्वपर को जानने का आत्मा का स्वभाव है। आत्मा परज्ञेय का कार्य करे अथवा परज्ञेय स्वयं का हो जाय – ऐसा आत्मा का स्वभाव नहीं है। अहा! वस्तु स्वभाव जैसा यथार्थ कहा गया है, वही न्याय है। लोगों को यह बात सूक्ष्म लगती है; परन्तु यह मूल मुद्दे की बात है। पर का गुरु बनना और पर का शिष्य बनना यह द्रव्य में गुणरूप से तो त्रिकाल मौजूद है; परन्तु द्रव्यस्वभाव की दृष्टि होने पर शक्ति का परिणमन पर्याय में होता है। उस पर्याय में बाहर के अनन्त ज्ञेय ज्ञात होते हैं; पर वे ज्ञेय मेरे हैं – ऐसा कोई माने तो वह उल्टी मान्यता है। दूसरे जीव का केवलज्ञान प्रगट हो अथवा मति-श्रुतज्ञान हो तो उसके ज्ञान में ज्ञेय होकर के ज्ञानाकार को ग्रहण करानेवाला तेरा स्वभाव है; परन्तु पर का तू हो जाय – ऐसा तेरा स्वभाव नहीं है। भगवान! तुम मात्र ज्ञाता-दृष्टा हो बस! यह बात यहाँ विशेषरूप से सिद्ध करते हैं। **(क्रमश:)**

ज्ञान गोष्ठी

सायंकालीन तत्त्वचर्चा के समय विभिन्न मुमुक्षुओं द्वारा
पूज्य स्वामीजी से पूछे गये प्रश्न और स्वामीजी द्वारा दिये गये उत्तर

(गतांक से आगे....)

प्रश्न : सम्यग्दर्शन नहीं होता तो पुरुषार्थ की निर्बलता को कारण मानें?

उत्तर : नहीं; विपरीतता के कारण तो सम्यग्दर्शन अटकता है और पुरुषार्थ की निर्बलता के कारण चारित्र अटकता है - ऐसा न मानकर सम्यक्त्व के न होने में पुरुषार्थ की निर्बलता को कारण मानना, यह तो पहाड़ जैसे महादोष को राई समान अल्प बनाने जैसा है। जो ऐसा मानता है कि सम्यग्दर्शन अटकने में पुरुषार्थ की निर्बलता कारण है, वह इस पहाड़ जैसी विपरीत मान्यता के दोष को दूर नहीं कर सकता।

प्रश्न : समयसार में शुद्धनय का अवलम्बन लेने के लिये कहा है; परन्तु शुद्धनय तो ज्ञान का अंश है, पर्याय है। क्या उस अंश के, पर्याय के अवलम्बन से सम्यग्दर्शन होगा?

उत्तर : शुद्धनय का अवलम्बन वास्तव में कब हुआ कहा जाय? अकेले अंश का भेद करके उसके ही अवलम्बन में जो अटका है, उसके तो शुद्धनय है ही नहीं। ज्ञान के अंश को अन्तर में लगाकर जिसने त्रिकाली द्रव्य के साथ अभेदता की है, उसको ही शुद्धनय होता है। ऐसी अभेद दृष्टि की, तब शुद्धनय का अवलम्बन लिया - ऐसा कहा जाता है। 'शुद्धनय का अवलम्बन' - ऐसा कहने पर उसमें भी द्रव्य-पर्याय की अभेदता की ही बात आती है। परिणति अन्तर्मुख होकर द्रव्य में अभेद होने पर जो अनुभव हुआ - उसका नाम शुद्धनय का अवलम्बन है, उसमें द्रव्य-पर्याय के भेद का अवलम्बन नहीं है; यद्यपि शुद्धनय ज्ञान का ही

अंश है, पर्याय है; परन्तु वह शुद्धनय अन्तर के भूतार्थ स्वभाव में अभेद हो गया है अर्थात् वहाँ नय और नय का विषय जुदा नहीं रहा। जब ज्ञानपर्याय अन्तर में झुककर शुद्धद्रव्य के साथ अभेद हुई, तब ही शुद्धनय निर्विकल्प है। ऐसा शुद्धनय कतकफल के स्थान पर है। जैसे – मैले पानी में कतकफल अर्थात् निर्मली नामक औषधि डालने पर पानी निर्मल हो जाता है, वैसे ही कर्म से भिन्न शुद्धात्मा का अनुभव शुद्धनय से होता है। शुद्धनय से भूतार्थ स्वभाव का अनुभव होने पर आत्मा और कर्म का भेदज्ञान हो जाता है।

प्रश्न : कितना अभ्यास करें कि सम्यग्दर्शन प्राप्त हो सके?

उत्तर : ग्यारह अंगों का ज्ञान हो जाये – इतनी राग की मन्दता अभव्य को होती है। ग्यारह अंग के ज्ञान का क्षयोपशम बगैर पढे ही हो जाता है, विभंग ज्ञान भी हो जाता है और सात द्वीप-समुद्र को प्रत्यक्ष देखता है, तो भी यह सब ज्ञान होना सम्यग्दर्शन का कारण नहीं है।

प्रश्न : ग्यारह अंग वाले को भी सम्यग्दर्शन नहीं होता, तब आत्मा की रुचि बगैर इतना सारा ज्ञान कैसे हो जाता है?

उत्तर : ज्ञान का क्षयोपशम होना – यह तो मंद कषाय का कार्य है, आत्मा की रुचि का कार्य नहीं। जिसको आत्मा की यथार्थ रुचि होती है, उसका ज्ञान अल्प हो तो भी रुचि के बल पर सम्यग्दर्शन होता है। सम्यग्दर्शन के लिये ज्ञान के क्षयोपशम की आवश्यकता नहीं; अपितु आत्मरुचि की ही आवश्यकता है।

प्रश्न : इतने अधिक शास्त्र हैं, उनमें सम्यग्दर्शन के लिये विशेष निमित्तभूत कौन-सा शास्त्र है?

उत्तर : स्वयं जब स्वभाव को देखने में उग्र पुरुषार्थ करता है, तब उस समय जो शास्त्र निमित्त हो, उसको निमित्त कहा जाता है। द्रव्यानुयोग हो, करणानुयोग हो, चरणानुयोग हो – वह भी निमित्त कहा जाता है। प्रथमानुयोग को भी बोधिसमाधि का निमित्त कहा है।

डॉ. भारिल्ल के काव्य की विशेषता है

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के काव्य की दो प्रमुख विशेषताएँ हैं - एक आध्यात्मिकता और दूसरी सरलता। पहली को हम भावपक्ष से सम्बन्धित सर्व विशेषताओं का केन्द्रबिन्दु कह सकते हैं और दूसरी को कलापक्ष से सम्बन्धित सर्व विशेषताओं का केन्द्रबिन्दु।

वैसे तो डॉ. भारिल्ल के काव्य में भाव एवं कला दोनों ही पक्षों से सम्बन्धित अन्य भी अनेक विशेषताएँ दृष्टिगोचर होती हैं; किन्तु उनमें से जो सर्वाधिक रूप से उभरकर हमारे सामने आती हैं, वे उपर्युक्त दो ही हैं। डॉ. भारिल्ल का सम्पूर्ण काव्य-रथ आध्यात्मिकता और सरलता के दो पहियों पर ही दौड़ रहा है, उसमें ये दोनों विशेषताएँ तिल में तेल की भाँति सर्वत्र व्याप्त हैं।

डॉ. भारिल्ल के काव्य का भावपक्ष आध्यात्मिक हैं और कलापक्ष सरल-सुबोध। आध्यात्मिकता डॉ. भारिल्ल के काव्य की आत्मा है और सरलता उसका शरीर।

यहाँ यदि गम्भीरता से ध्यान दिया जाए तो ज्ञात होगा कि उक्त दो विशेषताएँ केवल डॉ. भारिल्ल के काव्य की ही नहीं हैं; अपितु सम्पूर्ण जैन साहित्य की ही प्रमुख विशेषताएँ हैं। आचार्य कुन्दकुन्द, आचार्य पूज्यपाद, योगींदु देव आदि का साहित्य भी इसीप्रकार का है। इसे जैन साहित्य शास्त्र भी कहा जा सकता है। - **डॉ. वीरसागर जैन, दिल्ली**

जैन शास्त्र, भक्ति गीत, तीर्थ दर्शन तथा पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो - वीडियो, प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये vitragvani app आज ही Download करें या Visit करें - www.vitragvani.com

विविध चित्रों के लिए Visit करें - www.gurukahanartmusuem.org

Daily updates :- FB-/vitragvani YT-c/ vitragvani Telegram

संपर्क सूत्र - श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई

Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com

समाचार दर्शन -

ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन में अध्यात्म मेला...

25वाँ आध्यात्मिक शिक्षण शिविर सानन्द सम्पन्न

जयपुर : यहाँ पण्डित टोडरमल सर्वोदय ट्रस्ट के तत्त्वावधान में ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन में 2 से 9 अक्टूबर 2022 तक जिनागम के 25 महत्त्वपूर्ण विषयों का व्यवस्थित अध्ययन कराने वाला 25वाँ आध्यात्मिक शिक्षण शिविर पूजन, भक्ति, प्रवचन, कक्षादि अनेक मांगलिक आयोजनों सहित सम्पन्न हुआ।

इस आयोजन में श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय जयपुर के 175, आचार्य अकलंक महाविद्यालय बाँसवाड़ा के 25, आचार्य धरसेन महाविद्यालय कोटा के 48 – इसप्रकार 248 विद्यार्थियों सहित अनेक साधर्मियों ने जैनदर्शन के आध्यात्मिक व सैद्धान्तिक विषयों का गहराई से अध्ययन किया।

अन्य शिविरों से पृथक पद्धति वाले इस शिविर में प्रतिदिन लगभग 13 घंटे तत्त्वज्ञान का लाभ मिला, जिसमें रोजाना 5 प्रवचन व 24 कक्षाएँ संचालित हुईं। अंत में सभी विषयों की परीक्षा आयोजित कर विभिन्न कक्षाओं में विशेष स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को पुरस्कृत कर प्रमाण पत्र दिए गए।

उद्घाटन समारोह

02 अक्टूबर को प्रात: आयोजित उद्घाटन समारोह में ध्वजारोहण श्री निहालचन्दजी घेवरचन्दजी ओसवाल परिवार जयपुर, मण्डप उद्घाटन डॉ. जिनेन्द्रजी शास्त्री उदयपुर, मंच उद्घाटन श्री प्रदीपजी रपरिया कोलकाता एवं शिविर उद्घाटन श्री प्रेमचन्दजी बजाज परिवार कोटा के करकमलों से किया गया। इसी समारोह में श्री ताराचन्दजी सौगानी जयपुर ने आचार्य कुन्दकुन्ददेव, श्री अखिलजी-चारूजी-आर्यन जैन जयपुर ने धरसेन आचार्य, श्री तन्मयजी-ध्याताजी परिवार बजाज कोटा ने आचार्यकल्प पण्डितप्रवर टोडरमलजी, श्री शान्तिलालजी चौधरी भीलवाड़ा ने आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के चित्र का अनावरण किया। शिविर के मुख्य आमंत्रणकर्त्ता श्रीमती शशि-सुरेशचन्दजी जैन शिवपुरी व आमंत्रणकर्त्ता श्री गुमानमलजी, आलोकजी-प्रतिमाजी, अरविन्द-सरिताजी टोंग्या परिवार जयपुर रहे।

उद्घाटन समारोह अन्तर्राष्ट्रीय विद्वान डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल जयपुर के मंगल सान्निध्य में सम्पन्न हुआ, जिसकी अध्यक्षता श्रीमान प्रेमचन्दजी बजाज कोटा ने की। मुख्य अतिथि श्री महेन्द्रकुमारजी गंगवाल जयपुर रहे। ऑनलाइन माध्यम से श्री बसंतभाई दोशी मुम्बई एवं श्री महिपालजी बाँसवाड़ा सम्मिलित हुए। मंचासीन सभी अतिथियों व विद्वानों का स्वागत डॉ. शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल एवं पण्डित पीयूषजी शास्त्री ने किया। संचालन पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने किया।

शिविर में प्रवचनों की शृंखला

प्रात: पण्डित कमलचन्दजी पिड़ावा के शुद्धात्मशतक पर व्याख्यान, तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के अरिहंत चैनल के माध्यम से प्रवचनसार ग्रन्थ पर प्रवचन का प्रसारण एवं आध्यात्मिकसत्पुरूष गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के योगसार ग्रन्थ के आधार पर सी.डी. प्रवचनों का प्रसारण किया गया। तत्पश्चात् अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त विद्वान तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के मार्मिक प्रवचनों का लाभ मिला।

रात्रिकालीन दो प्रवचनों में मुख्य प्रवचन पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली का क्रिया-परिणाम-अभिप्राय एवं सम्यक्चारित्र का अन्यथा स्वरूप विषय पर सम्पन्न हुआ, इसके पूर्व प्रतिदिन क्रमश: समागत विशिष्ट विद्वानों में डॉ. वीरसागरजी शास्त्री दिल्ली, डॉ. राकेशजी शास्त्री नागपुर, डॉ. शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल जयपुर, डॉ. मनीषजी शास्त्री मेरठ, डॉ. प्रवीणजी शास्त्री बाँसवाड़ा एवं डॉ. दीपकजी शास्त्री जयपुर के प्रवचन हुए।

डॉ. भारिल्ल द्वारा विशेष प्रवचन

इस शिविर में अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त विद्वान डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के **क्रमनियमित पर्याय एवं समाधि का सार** विषय पर विशेष व्याख्यान हुए। डॉ. भारिल्ल ने अत्यन्त अस्वस्थ अवस्था में जहाँ चलता-बैठना भी मुश्किल है वहीं गद्दी पर बैठकर 1-1 घंटे अनवरतरूप से जिनागम के महत्त्वपूर्ण सिद्धान्तों का बहुत ही सरल, सुबोध व सहज प्रतिपादन किया। साथ ही उनका प्रायोगिकरूप क्या होता है वह भी उनके जीवन में प्रत्यक्ष महसूस किया गया। वे कहते हैं कि मैं समाधि में हूँ और समाधि मरण नहीं, जीवन है। आनन्द का नाम समाधि है और ऐसी समाधि में अपना प्रतिपल व्यतीत कर रहा हूँ।

शिविर की प्रमुख कक्षायें

शिविर में संचालित कक्षाओं में पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली की प्रवचनसार सुखाधिकार, डॉ. शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर की समयसार एवं परमानन्दस्तोत्र, डॉ. राकेशजी शास्त्री नागपुर की द्रव्यसंग्रह एवं प्रमेयरत्नमाला, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर की नयचक्र एवं कालचक्र, डॉ. दीपकजी शास्त्री वैद्य की 11 प्रतिमाएँ एवं सामान्य श्रावकाचार, डॉ. अरुणजी बण्ड जयपुर की ध्यान का स्वरूप, डॉ. मनीषजी शास्त्री मेरठ की श्रुत-परम्परा एवं तत्त्वार्थसूत्र, पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर की उपदेश का स्वरूप व न्यायदीपिका, पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री की महावीराष्टक/मंगलाष्टक व देव-शास्त्र-गुरू, डॉ. प्रवीणजी शास्त्री बाँसवाड़ा की तत्त्वार्थसूत्र एवं 14 गुणस्थान, पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री जयपुर की छहढाला व अणुव्रताधिकार, पण्डित संयमजी शास्त्री नागपुर की परीक्षामुख एवं सर्वज्ञ-सिद्धि, पण्डित जिनेन्द्रजी शास्त्री जयपुर की पूजन विधि स्वरूप एवं फल तथा पण्डित अमनजी शास्त्री लोनी की चार अभाव विषय पर कक्षायें चली।

शिविर के प्रमुख सारथी

श्रीमती आरती-अशोककुमारजी पाटनी परिवार सिंगापुर, श्रीमती कुसुम-प्रदीपजी सुपुत्र तिलकजी-अरिहंतजी चौधरी परिवार किशनगढ़, श्रीमती रेखा संजयकुमारजी, सुपुत्र तीर्थेश, सुपुत्री मोक्षा दीवान परिवार सूरत, श्रीमती कुसुम महेन्द्रकुमारजी सुपुत्र राहुलजी-विनीतजी गंगवाल परिवार जयपुर, श्रीमती आशा-अशोककुमारजी बड़जात्या परिवार इन्दौर, श्रीमती सुनीता-प्रेमचन्दजी सुपुत्र तन्मयजी-ध्याताजी बजाज परिवार कोटा, श्री निशीकान्तजी जैन परिवार औरंगाबाद, श्रीमती सुशीला-अजितप्रसादजी जैन सुपुत्र वैभवजी जैन परिवार दिल्ली, श्री प्रमोदजी एवं अरुणजी मोदी परिवार मकरोनिया सागर, श्री गौरवजी जैन सुपुत्र श्री परितोषवर्धनजी जैन परिवार जनता कॉलोनी जयपुर, श्रीमती मैनादेवी ध.प. स्व. पूनमचन्दजी सेठी सुपुत्र अनिलजी-सुभाषजी सुशीलजी सेठी परिवार दिल्ली, श्री माणकचन्दजी जैन एडपैन वाले मुम्बई, श्री कान्तिभाई मोटानी, विपुलभाई मोटानी परिवार मुम्बई, श्री नितिनभाई सी. शाह परिवार मुम्बई, श्री रमेशभाई मंगलजी मेहता हस्ते श्री निलेशभाई मेहता परिवार मुम्बई, श्री अवनीशजी मोदी परिवार मुम्बई, सावित्रीजी जैन दमोह एवं श्रीमती सुधा ध.प. प्रदीपजी गोधा जयपुर थे।

पुरस्कार वितरण एवं समापन समारोह

9 अक्टूबर 2022 को पुरस्कार वितरण एवं समापन समारोह आयोजित हुआ, जिसमें तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल की अध्यक्षता एवं शिविर में पधारे सभी विद्वानों की उपस्थिति थी। पुरस्कार वितरणकर्ता श्री प्रेमचन्दजी जैन एडवोकेट दौसा, श्री गौरवजी परितोषवर्धनजी जैन जयपुर एवं श्रीमती प्रभा-अजितकुमारजी जैन जौहरी बाजार जयपुर थे।

ट्रस्ट के कार्यकारी महामंत्री श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने शिविर में पधारे सभी विद्वानों एवं अतिथियों का तहे-दिल से आभार व्यक्त किया। पण्डित पीयूषजी शास्त्री ने सभी कार्यकर्ताओं एवं व्यवस्थापकों का आभार व्यक्त किया। विद्वत्वर्ग में डॉ. राकेशजी शास्त्री नागपुर, डॉ. शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर एवं डॉ. मनीषजी शास्त्री मेरठ का उद्बोधन हुआ।

शिविर में 24 विषयों की परीक्षाएँ ली गईं, जिसमें तीनों शास्त्री महाविद्यालयों के कुल 248 विद्यार्थियों ने 6-6 परीक्षाएँ दीं; इसप्रकार कुल 1488 उत्तर पुस्तिकाएँ जॉच कर 5 घंटे की अल्पावधि में रिजल्ट तैयार किया गया।

विशिष्ट स्थान प्राप्त करने वाले छात्र निम्नानुसार हैं- **उपाध्याय कनिष्ठ में** आर्जव जैन सिवनी, जिनय संघवी इन्दौर, कुशाग्र जैन सगवाड़। **उपाध्याय वरिष्ठ में** अरिहंत जैन बण्डा, आयुष जैन उदयपुर, आर्जव जैन खड़ैरी, अचल जैन उज्जैन, आराध्य जैन आरोन, महावीर देशमाने। **शास्त्री प्रथम वर्ष में जयपुर से** हर्ष जैन फुटेरा, अंकित जैन कुटोरा, चेतन जैन रहली, निश्चल जैन दिल्ली, मुदित जैन झालरापाटन, प्रिंस जैन बम्होरी। **शास्त्री द्वितीय-तृतीय वर्ष में** संदेश जैन दिल्ली, मोहित जैन फुटेरा, आदित्य जैन फुटेरा, समर्थ जैन हरदा, अतिशय जैन भिण्ड, राजाराम लोधी गनयारी, तन्मय जैन सिंगोली ने प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त किए। विद्यार्थियों को पुरस्कार राशि व प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया गया।

पूजन एवं भक्ति का समस्त आयोजन पण्डित जिनेन्द्रजी शास्त्री, पण्डित रिमांशुजी शास्त्री, पण्डित समकितजी शास्त्री एवं पण्डित दिव्यांशजी शास्त्री द्वारा किया गया। कार्यक्रमों का संचालन पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री जयपुर ने किया। शिविर के संयोजन में पण्डित सर्वज्ञजी भारिल्ल, पण्डित रूपेन्द्रजी शास्त्री, पण्डित गौरवजी शास्त्री एवं पण्डित आकाशजी शास्त्री की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही।

रत्नत्रय विधान एवं व्याख्यानमाला

सागर (महावीर जिनालय) : यहाँ दिनांक 12 से 16 अक्टूबर 2022 तक श्री महावीर जिनालय परकोटा में प्रातः रत्नत्रय मण्डल विधान का आयोजन किया गया। इस अवसर पर गुरुदेवश्री के सी.डी. प्रवचन के उपरान्त डॉ. संजीवकुमारजी गोधा के प्रातः समयसार के पुण्य–पाप अधिकार एवं रात्रि में जिनेन्द्र भक्ति के पश्चात् भक्तामर स्तोत्र पर मार्मिक प्रवचनों का लाभ मिला। विधि–विधान के समस्त कार्य ब्र. नन्हे भैया सागर व पण्डित अशोकजी उज्जैन ने सम्पन्न कराए। इस प्रसंग पर जिनालय में विशेषरूप से तैयार कर लगाये गये विविध चित्रपटों का अनावरण किया गया।

पण्डित मन्नूलालजी जैन एवं डॉ. संजीवकुमारजी गोधा का...

भव्य अभिनन्दन समारोह सम्पन्न - दिनांक 16 अक्टूबर 2022 को विशाल जनसमुदाय के मध्य श्री कुन्दकुन्द कहान स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट महावीर जिनालय परकोटा, जिनवाणी तत्त्वरसिक स्वाध्याय प्रेमी मुमुक्षु मण्डल मकरोनिया, तारण–तरण चैत्यालय सागर, अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन एवं श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन ट्रस्ट ज्ञानोदय भोपाल के द्वारा अध्यात्मवेत्ता **डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर** को जिनशासन की मंगल प्रभावना करने हेतु **'अध्यात्म–विभूति'** की उपाधि से अलंकृत किया गया एवं सागर के वयोवृद्ध विद्वान पण्डित मन्नूलालजी जैन वकील साहब को **'जैन विद्वत्रत्न'** की उपाधि से अलंकृत किया गया।

यह समारोह सागर विधायक शैलेन्द्रजी जैन के मुख्य आतिथ्य एवं श्री आई.एस. जैन मुम्बई की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री उल्लासभाई जोबालिया मुम्बई, श्री प्रदीपजी पाटनी इंदौर, श्री अशोकजी जैन ज्ञानोदय भोपाल, श्री प्रमोदजी जैन विदिशा, श्री सुधीरजी जैन कटनी, डॉ. भरतजी जैन उज्जैन, श्री जितेन्द्रजी जैन मलकापुर, श्री अजयजी जैन गौरझामर, श्रीमती लवलीजी जैन (ए.एस.पी.) सागर आदि मंचासीन थे। अतिथियों द्वारा दोनों विद्वानों को तिलक, माला, साफा, शॉल, श्रीफल एवं प्रशस्ति पत्र भेंट कर सम्मानित किया गया। प्रशस्ति पत्र का वाचन पण्डित अखिलेशजी शास्त्री ने किया। स्वागत भाषण श्री सुनीलजी सराफ, संचालन श्री प्रियंकजी शास्त्री एवं आभार–प्रदर्शन श्री अतुलजी सतभैया ने किया। **–अमित 'अरिहंत'**

डॉ. गोधा द्वारा रत्नकरण्ड श्रावकाचार का शुभारम्भ

सागर (म.प्र.) : अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त विद्वान डॉ. संजीवकुमारजी गोधा द्वारा गत अनेक वर्षों से नियमित प्रवचन शृंखला के अन्तर्गत अनेक ग्रन्थों का शब्दशः स्वाध्याय कराया जा चुका है। इसी क्रम में दिनांक 16 अक्टूबर 2022 को श्री महावीर जिनालय परकोटा सागर से आचार्य समन्तभद्र विरचित ग्रन्थ श्री रत्नकरण्ड श्रावकाचार पर प्रवचनों का शुभारम्भ किया गया।

कार्यक्रम के शुभारंभ हेतु रत्नकरण्ड श्रावकाचार ग्रन्थ की शोभा यात्रा ग्रीन वैली तिली चौराहे पर पहुँची, जहाँ सर्वप्रथम विविध नगरों से पधारे श्रेष्ठी वर्ग द्वारा ध्वजारोहण किया गया। श्री रमेशकुमारजी, राजेशकुमारजी, विक्रान्त– कुमारजी जैन चौधरी परिवार एवं श्री अनूपकुमारजी, हर्षुलकुमारजी जैन परिवार सागर द्वारा डॉ. संजीव कुमारजी गोधा को रत्नकरण्ड श्रावकाचार भेंट कर वाचना प्रारम्भ करने हेतु निवेदन किया गया। डॉ. संजीवजी गोधा ने इस शुभारम्भ सभा में ग्रंथकर्त्ता आचार्य समन्तभद्र एवं हिन्दी वचनिकाकार पण्डित सदासुखदासजी कासलीवाल के व्यक्तित्व–कृतित्व का परिचय देते हुए रत्नकरण्ड श्रावकाचार ग्रन्थ पर प्रवचन का शुभारम्भ किया।

इस प्रसंग पर कोटा निवासी श्री कमलजी बोहरा द्वारा रत्नकरण्ड श्रावकाचार को ताम्रपत्र पर तैयार कराकर महावीर जिनालय सागर को भेंट दिया गया। जिसे जिनमंदिर में विराजमान करने का सौभाग्य कल्पनाबेन, पंकजजी, संजीवजी परिवार को प्राप्त हुआ।

इस प्रसंग पर डॉ. गोधा ने बताया कि सत्पथ फाउण्डेशन नागपुर द्वारा रत्नकरण्ड श्रावकाचार ग्रन्थ पर आधारित 1008 प्रश्न तैयार कर प्रश्नमंच का भव्य आयोजन किया जाएगा, जिसके रजिस्ट्रेशन की प्रक्रिया शीघ्र ही प्रारम्भ की जाएगी।

आप Dr. Sanjeev Godha youtube के माध्यम से प्रतिदिन रात्रि 8:00 बजे से ग्रन्थ के आद्योपान्त स्वाध्याय का लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

सागर (तारण–तरण चैत्यालय) : यहाँ दिनांक 17–18 अक्टूबर 2022 को अध्यात्मवेत्ता डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर के प्रात: समयसार के पुण्य–पाप अधिकार एवं रात्रि में रत्नकरण्ड श्रावकाचार पर सारगर्भित प्रवचनों का लाभ मिला। उक्त दोनों ही स्थानों पर कार्यक्रमों में स्थानीय समाज के सैंकड़ों साधर्मियों ने भरपूर लाभ लिया। ज्ञातव्य है कि 17 अक्टूबर को दोपहर में **दमोह (म.प्र.)** के साधर्मियों को डॉ. संजीवजी गोधा के विशेष व्याख्यान का लाभ मिला।

सागर में आयोजित समस्त कार्यक्रमों का संयोजन श्री सुनीलजी सराफ ने किया।

वाह..ज़िंदगी द्वारा डॉ. गोधा को जैनरत्न

वाह..ज़िंदगी द्वारा देशभर से जैन समाज की कुछ चुनिन्दा हस्तियाँ जिन्होंने विविध क्षेत्रों में उल्लेखनीय कीर्तिमान हासिल किया है, उन्हें **जैन रत्न** से सुशोभित किया गया। इसी क्रम में **अन्तर्राष्ट्रीय विद्वान डॉ. संजीवकुमारजी गोधा** को **जैन रत्न** से सम्मानित किया गया। जिनके जीवन व परिश्रम को 02 सितम्बर 2022 को टी.वी. पर आदिनाथ चैनल के माध्यम से सर्वत्र देखा गया। आप भी डॉ. संजीव गोधा के यूट्यूब चैनल पर उस वीडियो को **जैन रत्न** के नाम से देख सकते हैं।

वाह..ज़िंदगी के डायरेक्टर श्री ललितजी सरावगी ने बताया कि डॉ. गोधा जैन समाज की एक ऐसी शख्सियत हैं, जिन्होंने अपने सरल आध्यात्मिक प्रवचनों के माध्यम से हजारों/लाखों लोगों के जीवन को तत्त्वज्ञान से सींचकर अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर पूरी दुनिया में जैनशासन का परचम फहराया है। आज जिन्हें यूट्यूब के माध्यम से लगभग 25 हजार लोग एवं पारस टी.वी. के माध्यम से लगभग 1 लाख लोग प्रतिदिन देखते-सुनते हैं। आपके द्वारा अभी तक लगभग 25-30 हजार प्रवचन किए जा चुके हैं। ज्ञातव्य है कि **जैनरत्न** से पूर्व आपको अध्यात्मवेत्ता, अध्यात्म-चक्रवर्ती, उपाध्यायकल्प आदि उपाधियों से अलंकृत किया जा चुका है।

महाविद्यालय की महत्त्वपूर्ण गतिविधियों के अन्तर्गत...

साप्ताहिक विचार गोष्ठी सानन्द सम्पन्न

जयपुर : यहाँ श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय जयपुर की गतिविधियों के अन्तर्गत तात्त्विक विचार गोष्ठियों की शृंखला में दिनांक 18 अक्टूबर 2022 को **वीर निर्वाण महोत्सव** विषय पर जैन धर्म के परिप्रेक्ष्य में दीपावली पर्व के स्वरूप को स्पष्ट करने वाली गोष्ठी का आयोजन किया गया।

गोष्ठी की अध्यक्षता पण्डित संजयजी शास्त्री सेठी जयपुर ने की। सत्र का संचालन वैभव जैन सागर तथा सुबलश्री समाज बेलगाव एवं मंगलाचरण शुभ जैन सागर ने किया। श्रेष्ठ वक्ताओं के रूप में प्रथम स्थान पर भव्य जैन उदयपुर एवं द्वितीय स्थान पर सिद्धान्त जैन खड़ैरी चुने गए।

आभार-प्रदर्शन उपप्राचार्य पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री ने किया।

तीर्थधाम सिद्धायतन में कीर्तिस्तभ एक अनोखा प्रयास

द्रोणगिरि : यहाँ 16 अक्टूबर 2022 को समयसार संप्राप्ति वर्ष एवं आजादी के अमृत महोत्सव के अवसर पर तीर्थधाम सिद्धायतन द्रोणगिरि में 21 फुट उन्नत कीर्तिस्तंभ का लोकार्पण किया गया। तीर्थधाम सिद्धायतन के संस्थापक अध्यक्ष श्री चंद्रभानजी जैन परिवार घुवारा के आर्थिक सहयोग से निर्मित इसका लोकार्पण मध्यप्रदेश के महामहिम राज्यपाल श्री मंगूभाई पटेल के द्वारा ऑनलाइन किया गया एवं शिलान्यास श्री इंद्रजीतजी गंगवाल इंदौर परिवार की ओर से किया गया।

इस कीर्तिस्तंभ की विशेषता यह है कि इसमें आचार्य कुन्दकुन्द देव विरचित समयसार परमागम की 100 मूल गाथायें पद्यानुवाद सहित टंकोत्कीर्ण की गई हैं एवं 8 पट्टों पर तीर्थधाम सिद्धायतन, आचार्य कुन्दकुन्ददेव, गुरुदेवश्री का परिचय एवं निर्माणकर्ता के नामों के साथ ही बुंदेलखण्ड के 281 स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के नाम जिलेवार उत्कीर्ण किए गए हैं। कीर्तिस्तभ में जैन समाज के गौरवशाली इतिहास को परिचित कराने वाले शिलापट्ट भी लगाये गए हैं। देश की आजादी में प्राण न्योछावर करने वाले समाज के 20 शहीदों, दांडी यात्रा में सम्मिलित हुई महिला एवं संविधान निर्मात्री सभा के 6 सदस्यों के नाम अंकित किए गए हैं।

पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली की प्रेरणा से जैन समाज के गौरवमयी इतिहास का परिचय कराने का यह एक छोटा सा प्रथम प्रयास है।

कर्नाटक में धर्म प्रभावना

अनगोल–बेलगांव : यहाँ ब्राह्मी महिला मण्डल अनगोल के तत्त्वावधान में 8 व 9 अक्टूबर 2022 को द्वितीय सम्यक्त्व संस्कार शिविर का आयोजन हुआ। इस अवसर पर पण्डित मिथुनजी शास्त्री द्वारा तीनलोक, श्रावकाचार, कालचक्र आदि विषयों एवं पण्डित अनेकान्तजी शास्त्री द्वारा मनुष्यभव, जैनधर्म, क्रमबद्धपर्याय, मुनिधर्म आदि विषयों को सरलता से स्पष्ट किया गया।

सोंधा : यहाँ आचार्य अकलंक की साधना व समाधि स्थली में 14 से 16 अक्टूबर 2022 तक धार्मिक शिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। यह शिविर गुरूकुल के छात्रों की मुख्यता से मठ के पट्टाचार्य महाराज के निर्देशन में पण्डित मिथुनजी शास्त्री व पण्डित अनेकान्तजी शास्त्री द्वारा संचालित किया गया।

सदी के ऐतिहासिक पंचकल्याणक का ...

ढाईद्वीप रथ महाराष्ट्र में आमंत्रण देते हुए

R.N.I. No. 38278/83 *Postal Regd. No. JaipurCity/421/2021-23*

मंगल आमंत्रण

अवश्य पधारें!

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर के निर्देशन में

श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन शासन प्रभावना ट्रस्ट इन्दौर द्वारा

आध्यात्मिक सत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के पुण्य प्रभावना योग में निर्मित

विश्व की अद्वितीय रचना तीर्थधाम ढाईद्वीप जिनायतन में

श्री 1008 आदिनाथ दिगम्बर जिनबिंब

पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव

शुक्रवार, दिनांक 20 जनवरी से गुरुवार, 26 जनवरी 2023

रजिस्ट्रेशन फॉर्म लिंक

PLEASE SCAN

PLEASE CLICK HERE

https://reg.dhaidweep.com/

रजिस्ट्रेशन की अन्तिम तिथि 10 नवम्बर 2022

रजिस्ट्रेशन से संबंधित सहायता के लिए संपर्क करें –93437 00891

/Dhaidweep Indore /+91 93437 00891 www.dhaidweep.com

प्रकाशन तिथि : 21 अक्टूबर 2022

सम्पादक :
डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल
शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., पीएच. डी.
सह–सम्पादक :
डॉ. संजीवकुमार गोधा
एम.ए.द्वय , नेट, एम. फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी.
प्रकाशक एवं मुद्रक :
ब्र. यशपाल जैन, एम. ए.
द्वारा पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के लिये
जयपुर प्रिंटर्स प्रा.लि., जयपुर से
मुद्रित एवं प्रकाशित।

If undelivered please return to -- **Pandit Todarmal Smarak Trust , A-4, Bapu Nagar, Jaipur - 302015**